SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वतंत्रता सेनानीः संत अभिराम परमहंस

शिशिर बेहेरा, Ph.D., ओड़िआ भाषा एवं साहित्य विभाग
महाराजा श्रीरामचन्द्र भंजदेव विश्वविद्यालय, बारीपदा, ओड़िशा, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
शिशिर बेहेरा, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/06/2023
Revised on : -----
Accepted on : 29/06/2023
Plagiarism : 01% on 23/06/2023

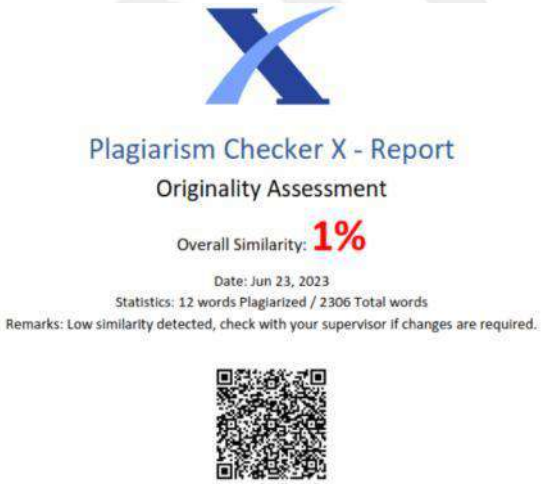

शोध सार

संत अभिराम परमहंस भारतीय आध्यात्मिक दिगवलय़ में एक ऐसा चन्द्रमा है, जिनके पावन किरणों से भक्ति और दिव्य भावना का आभास होता है। ओड़िशा राज्य का पुरी जिला अन्तर्गत करमला गांव में जन्मी इस योगजन्मा संत–साधु ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में अपने योगदान देकर एक नई दिशा और पहचान बनाया। ब्रिटिश शासित भारतवर्ष में भारतीय जनता का दुःख, दुर्दशा और यन्त्रणा को देखकर वे न केवल आहत हुए थे, बल्कि इस अन्याय, अत्याचार का विरोध करके अंग्रेजों के बारे में अपने प्रतिवाद जताई साहित्य के माध्यम से। 'कलि भागवत' उस का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है। ओड़िआ भाषा में शरीर तत्व और पिंडब्रह्माण्ड रहस्य को व्यक्त करने में सांकेतिक भाषा एवं शब्दो में अभिराम ने देशात्मबोधक प्रतिवेदन जताई जिसको लेकर उनको व्रिदोही और देशद्रोही आरोप लगाया गया। ब्रिटिश सरकार ने देशद्रोह कार्य करने का परिणाम स्वरूप अभिराम परमहंस को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। लेकिन स्वाभिमान संत साधू इस स्थिति में अविचल रहकर खुशी मनसे कारावास को अपनाया। समग्र भारतवर्ष में अरविंद के उपरांत अभिराम एकमात्र ऐसा संत थे, जिसने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में योगदान देकर कारावास स्वीकार किया था। 'कलि भागवत' आज भी ओड़िआ साहित्य और ओड़िशा के आध्यात्मिक परिमंडल में अपना स्वतंत्र आसन सुरक्षित रखा है।

मुख्य शब्द

ओडिसा, सेनाना, साधु, साहित्य, आंदोलन.

प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में ओड़िशा का बहुत बड़ा योगदान है। देश की आजादी हेतु कई लोगों का योगदान, स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से

भाग लेकर राष्ट्रीय एकता के प्रदर्शन के प्रति उनका योगदान स्वीकार किया जाता है। राष्ट्रसेवा को जीवन संवर के रूप में स्वीकार कर पराधीन भारत को स्वाधीनता दिलाने के लिए प्रमुख संतों के आत्म–त्याग एवं कर्मधारा ने उनके व्यक्तित्व की महानता का प्रतिनिधित्व किया है। ओड़िशा के राष्ट्रीय जीवन में ऐसे कई सेनानीयों का उल्लेख किया जा सकता है, जिनके बलिदान, समर्पण और मुक्ति आंदोलन के लिए कारावास की तरह अद्वितीय राष्ट्रवाद के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सफल रहा है। उसी प्रकार एक महान स्वतंत्रता सेनानी अभिराम परमहंस ओड़िशा की सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया में एक बहुचर्चित एवं स्मरणीय प्रतिभा है।

ब्रिटिश शासित भारतवर्ष में स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान और देश के लिए बलिदान करने वाले कई महापुरुषों की त्यागपूर्ण जीवन को दर्शाया गया है। मात्र, ओड़िशा में अभिराम परमहंस अद्वितीय थे। एक सारस्वत संत और एक सिद्ध तपस्वी के रूप में आध्यात्मिक जगत में उनकी पहचान कुछ अलग ही है। सनातन धर्म के प्रचारक, वैष्णववाद के प्रतिपादक और मानवकल्याण के लिए उनका सद्गुरुत्व संपूर्ण ओड़िशा और ओड़िशा के बाहर बहु संत समाज एवं आध्यात्मिक भक्तों में आदरणीय था। केवल ओड़िशा में ही क्यों, पूरे भारत में अभिराम परमहंस ही एक संत थे, जिन्होंने पहले राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन किया और महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित होकर उन्होंने मातृभूमि की सम्मान और स्वाभिमान के लिए लेखनी की है। ब्रिटिश तथा अंग्रेजो के विरोध लेखन के लिए उनको एक राजद्रोही बनकर कठोर कारावास भी झेलना पड़ा था।आध्यात्मिक खोज में स्वतंत्रता की ऊष्मता और मुक्ति मंत्रों का गायन उनकी रचनाओं में बहुत मार्मिक है। 'कलि भागवत' उनके संघर्ष के जज्बे की क्रांतिकारी सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

18 जनवरी, 1904 को पुरी जिले के करमला गांव में, त्रिवेणी अमावस्या तिथि में, संत अभिराम परमहंस का जन्म हुआ था। वे माता राधादेवी और पिता सत्यवादी पट्टनायक के छोटे पुत्र हैं। समय के साथ, संसार विराग हेतु सन्यास धर्म को ग्रहण कर श्रीजगन्नाथ धर्म के एक महान उपदेशक तथा ओड़िशा के धार्मिक आंदोलन के सद्गुरु के रूप में परिचित होने लगे। वे विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए उन इलाकों में मानविक संहति की स्थापना और सामाजिक सद्भाव, शांति और मित्रता का प्रचार करते थे, लेकिन महामानव अभिराम परमहंस राष्ट्रीय जीवन की दुर्गति, और पराधीन भारतवर्ष में ब्रिटिश शासन की क्रूरता से असंतुष्ट थे। नतीजन, उनके विरोधी मनोभाव लेखक जीवन ने तथाकथित अंग्रेज शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। धर्म–दर्शन के माध्यम से राष्ट्रवाद की आवाज़ धीरे–धीरे उठने लगी। वे पराधीन भारतवर्ष के असहाय लोगों की कठिनाइयां, शोषण, पीड़ा, आदि जैसे कई दुखों और कष्टों को देखकर व्यथित थे। उन्होंने असंख्य कविताओं और कहावतों की भी रचना की। एक प्रचंड देशभक्त के रूप में उनका तपस्वी जीवन पुलकित हो रहा था। वे आध्यात्मिक जागरण के साथ ज्ञान, भक्ति, योग के प्रचार–प्रसार में समर्पित थे।

जब पूरा भारतवर्ष ब्रिटिश शासन के आतंक में भयभीत हुआ पड़ा था और उस अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए महात्मा गांधी जैसे राष्ट्रीय नेतृत्वों के मार्गदर्शन से समग्र भारतवर्ष स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रस्तुत था, ओडिशा भी उसी आत्मविश्वास से आगे बढ़ चला। साल 1921, 23 मार्च को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का ओड़िशा में आगमन के साथ कटक के काठजोड़ी के तट पर उन्होंने ओड़िशा के लोगों को स्वतंत्रता यज्ञ में सम्मिलित होने को आह्वान किया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओड़िशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी का गठन के साथ पंडित उत्कलमणि गोपबंधु दास के नेतृत्व में किया गया था। महात्मा के आह्वान पर, ओड़िशा के गणमान्य व्यक्तियों से लेकर आम लोगों तक इस आंदोलन में शामिल हुए। संत अभिराम परमहंस भी इसमें अपना योगदान किए। एक संसारत्यागी, अध्यात्मवादी, सन्यासी के रूप में पदयात्रा कर राष्ट्रीय मनुष्यों को दिव्यज्ञान प्रदान करने में लगातार नियोजित हुए थे। वे महापुरुष महात्मा गांधी के सत्य–अहिंसा से विशेष रूप से प्रभावित हुए थे। इसी राष्ट्रीय भावना से उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'कलि भागवत'; का जन्म हुआ। न केवल ओड़िशा के आध्यात्मिक क्षेत्र में, बल्कि स्वतंत्रता के इतिहास में भी, इस पुस्तक ने एक विशेष चमक पैदा की थी। इसमें गांधी के आदर्शों के संदेश को विस्तार रूप से प्रकाश किया गया था। उदाहरण के लिएः

"जो हैं महान आत्मा। वही हैं महात्मा।

पच्चीस के साथ खेली। ब्रिटिश राजा महाबली।
निःशुल्क से जो शुल्क लेता। अधर्म उसीका होता।
इसलिए महान आत्मा बनकर। कहते सबको समझाकर।
उनका नाम है महात्मा। जानते हैं सभी आत्मा।" (कलि भागवत)

इसमें उन्होंने सत्य और अहिंसा को सर्वोच्च धर्म बताकर महात्मा के साथी बनने का आह्वान किया था। जीव–परम की सैद्धांतिक आवेदन भी देकर राष्ट्रीय संघर्ष का समर्थन करना था इस रचना की अंतरधारा। अभिराम परमहंस ने ओड़िशा के लोगों को कटाक्ष और सुरुचिपूर्ण अंदाज में संबोधित किया:

"जितने सत्याग्रही थे। महात्मा के संग शामिल हुए।
महात्मा का वचन है यही। विदेशियों को जो पसंद नही।
तभी तो होगा विवाद का प्रारंभ। जो विश्व करेगा आरंभ।
होगा भारत का नाट। नही रहे भारत के सम्राट।"

स्वाधीनता आंदोलन में योगदान और कारावास

अभिराम ने इस पुस्तक की रचना 1929 में कटक जिला का माहांगा के इच्छापुर गांव में रहते हुए की थी। इसका लेखन 1932 में समाप्त हुआ था। लेखक खुद इस बात से वाकिफ थे कि इसके लिए उन्हें कारावास भी भुगतना पड़ सकता है तो उन्होंने अपने शिष्यवर्ग को सूचना दे दिया था: "कलि भागवत" लिखा गया, अब मैं अपने मामा के घर जाऊंगा।" यह पुस्तक 29 दिसंबर, 1933 को प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक को ब्रह्मपुर के शशिभूषण रथ के आशा प्रेस में छापा गया था। पुस्तक के प्रकाशन के तुरंत बाद ओड़िशा में हलचल मच गई थी। आध्यात्मिक जनता और उग्रवादी दोनों ही स्वतंत्रता आंदोलन और ब्रिटिश विरोधी विचारधारा के ज्वलंत लेखन से विशेष रूप से प्रभावित थे। अभिराम पर देश विरोधी कृत्य करने का आरोप लग गया। तत्कालीन माहांगा थाना के अधिकारी दुर्गानंद मिश्रा अभिराम के "कलि भागवत" के विरुद्ध एक गुप्त रिपोर्ट तैयार कर बिहार, ओड़िशा के एस्पी के निकट भेज दिया। ब्रिटिश सरकार के भरोसेमंद कर्मचारी दुर्गानंद मिश्रा ने अभिराम के "कलि भागवत"के कुछ छंदों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया था। परिणामस्वरूप अभिराम परमहंस को अंग्रेज सरकार के प्रकोप का शिकार होना पड़ा। 20 सितंबर 1934 को, गंजाम के स्पेशल ब्रांच इंस्पेक्टर बी. सुबाराओ ने मद्रास के तत्कालिन मुख्य शासन सचिव GTH Blackend के आदेश पर अभिराम के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा दायर किया। इससे पहले भी 10 अप्रैल, 1934 के गजट नोटिस में "कलि भागवत" के बारे में जानकारी दी गई थी और लेखक अभिराम परमहंस के अंग्रेज शासन के प्रति अवमानना और देशद्रोही रवैये का खुलासा किया गया था। ... The said book contains passages of sealicious matters intended to bring into hatredAnd contempt- His majesty the king emperor and the Government established by law in British India.

इसके साथ ही मुद्राकर शशिभूषण रथ, प्रकाशक श्यामसुंदर गंतायत की आशा प्रेस और अभिराम की करमला आश्रम की तलाशी की गई। पुस्तक को प्रतिबंधित घोषित करने के साथ ही अभिराम के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्वेष देशद्रोह का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया गया। "कलि भागवत" आशा प्रेस द्वारा प्रकाशित होने के कारण शशिभूषण रथ को इस मुकद्दमे का भागीदार बनाया गया। 29 सितंबर, 1934 को विचार शुरू हुआ। अभिराम परमहंस जी की तरफ से वकील रमेशमूर्ति, शशिभूषण की तरफ से लिंगराज पाणिग्राही बकाया मामले का प्रबंधन कर रहे थे। "कलि भागवत" में लिखे विदेशी, पंचम जॉर्ज, सत्याग्रही, महात्मा, मोहनसेना, यूरोपीयन, कांग्रेस दल आदि शब्दों पर विशेष प्रतिक्रिया रखी गई। एक संत पर राजद्रोह का आरोप लगने के कारण सहस्र लोग अभिराम को देखने और उनका मुकदमा सुनने के लिए अदालत में आए थे। कांग्रेस के कई नेताएं जैसे: विश्वनाथ दास, पंडित नीलकंठ दास, लिंगराज पाणिग्राही, उदयनाथ पट्टनायक जैसे प्रमुख हस्तियां वहां मौजूद थे। तत्कालीन गोरासाहेब कलेक्टर डिक्सन साहब के कोर्ट में मामले की सुनवाई शुरू हुई। पुरी के जगबंधु सिंह अधिवक्ता के रूप में और पंडित बिनायक मिश्रा अभिराम परमहंस के लेखन की व्याख्या करने के लिए गवाह के रूप में उपस्थित हुए लेकिन

अबीचल संत अभिराम ने स्वभावसुलभ आचरण से मुस्कराते हुए प्रतिमूर्ति की तरह न्यायाधीश को अपने पक्ष में अपनी रचना की दार्शनिक व्याख्या सुनाई। पंडित नीलकंठ दास ने उस निर्णय दिवस की घटनाओं का उल्लेख कर कहा है:

"ध्यान देने वाली बात यह है, वह युवा सन्यासी दिन–ब–दिन कोर्ट में खड़े हुए हैं। वे जानते हैं की वे लंबे समय तक जेल जाएंगे। मात्र मुख में हमेशा वही स्वच्छंद हास्यरेखा। पहनते सिर्फ गेरुआ सूती कपड़ा व दो जूते। एक बजे कचहरी से लौटकर दो रोटी खाते। ऐसे व्यक्ति को देख आदर और भक्ति महसूस होती है। एक सज्जन व्यक्ति, वह युवा संत दिमाग से निकलने वाली वस्तु नहीं है।" (गीताभाष्यः मुखबंध, पंडित नीलकंठ दास)। विचार 13 दिसंबर, 1934 तक जारी रहा। अंततः डिक्सन ने अभिराम को देशद्रोही और दोषी के रूप में स्वीकार कर एक वर्ष की कठिन कारावास की सज़ा सुनाई। एडवोकेट जगन्नाथ दास ने इस फैसले के खिलाफ अपील करने के बावजूद उसे खारिज कर दिया गया और उन्हें छतरपुर जेल भेज दिया गया। लेकिन उधर भारी भीड़ और अन्यायपूर्ण सजा के विरोध में आवाज उठाने के कारण, अंग्रेज सरकार ने अभिराम परमहंस को राजामहेंद्री जेल में स्थानांतरित कर दिया। राजमहेन्द्री जेल में रहते हुए, अभिराम अपनी अखंड साधुता और दिव्य भावना से सभी को आकर्षित करने में सक्षम थे। ओड़िशा के पूर्व न्यायाधीश और मद्रास के अधिवक्ता बाबू जगन्नाथ दास ने मद्रास हाईकोर्ट में एक अपील दायर कर अभिराम की रिहाई की मांग की। उनके कारावास की समाप्ति से पहले, अटॉर्नी जनरल ने स्थानीय कलेक्टर को एक पत्र लिखकर अभिराम की रिहाई की मांग की। डिक्सन साहब के आदेश पर, अभिराम परमहंस की एक साल की जेल की अवधि को घटाकर एक महीने और ग्यारह दिन करने के बाद उन्हें राजामहेंद्री जेल से रिहा कर दिया गया।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण लोगों की शहादत, कठिन कारावास ने एक नया अध्याय रच दिया है। मात्र एक संत के रूप में राष्ट्रीय संघर्ष में अपना योगदान कर महाबली ब्रिटिश शासकों का तीव्र विरोध और समालोचना कर विनोद मानस से कारावास ग्रहण करने वाले ओड़िशा के महान संत अभिराम परमंस की भूमिका एक सुनहरे अध्याय की प्रारंभ की है। जिस तरह महान योगी अरबिंदो ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान कर कारावास गए, उसी प्रकार ओड़िशा के महान साधु अभिराम देशदृमातृका के लिए खुदको समर्पित कर दिए थे। एक महान स्वतंत्रता सेनानी के रूप में ओड़िशा के संत पूरे संसार को गौरव दिलाने में अभिराम परमहंस ने ही एक यथार्थ सेनानी की भूमिका निर्वाह की है।

निष्कर्ष

संत अभिराम परमहंस एक आध्यात्मिक गुरु, समाज सुधारक, साहित्यकार, मानवतावाद के प्रतिपादक, श्रीजगन्नाथ धर्म के उपदेशक, ब्राह्मज्ञान के महान दार्शनिक थे। वे असंख्य भजनों, कीर्तनों, छंदों, चौतीशों, मालिका, स्तुतियौन, प्रार्थनाओं, संकीर्तन, रासलीला, गीता, पुराण आदि के रचायता हैं। वे ओड़िशा के सारस्वत जगत में एक सिद्धसाधक, संत साहित्य के प्रणेता हैं। उनके विशाल साहित्य निर्माण में धर्म, दर्शन, आध्यात्मिक जागृति, ब्रह्मसूत्र, शरीर तत्व, गुरुवाद के विभिन्न पहलुओं को महसूस किया जा सकता है। विशेषतः एक राष्ट्रीय आंदोलन के नेता तथा स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनकी प्रतिभा की उज्ज्वल दिशा अधिक विस्तारित हुई है। उनका सारस्वत निर्मित ग्रंथ हीं इस सत्य का सबूत है। वे सिर्फ एक संत नहीं थे, वल्कि वे थे मानवीय संवेदना और मूल्यवोध को प्रतिष्ठा देने वाले एक महान समाज संस्कारक। सनातन धर्म सर्वोपरि श्री जगन्नाथ संस्कृति को प्रतिष्ठा देने वाले संत महापुरुष थे अभिराम परमहंस स्वामी। ओड़िशा का मिट्टी में पंचसखा से लेकर संत आरक्षित दास एवं संत भीमभोई तक जिस आध्यात्मिक और धार्मिक विप्लव अग्रसर हुआ था उस परंपरा में अभिराम परमहंस थे यथार्थ उत्तरसूरी। उनको ओड़िशा में जगतगुरु ठाकुर अभिरान परमहंसजी के नाम से सर्वत्र पूजित है। पिंडब्रह्माण्ड रहस्य और धार्मिक जागरूकता पैदा करना था उनके स्वभाव। महापुरुष अभिराम ने मानवीय मूल्यवोध को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। दलित और पिछड़े वर्ग के उत्थान और विकास के लिए उनका कार्यधारा हर एक मनुष्य के लिए अनुकरणीय था। वे थे मानवीय संवेदना और सहानुभूति का जीता जागता उदाहरण। धर्म के नाम पर प्रचलित कुसंस्कार, विद्वैष भाव के प्रति वे थे प्रतिक्रियाशील। धार्मिक समानता और सर्वधर्म समन्वय भावना प्रसार करना था उनका धर्म प्रचार का

प्राथमिक उद्देश्य जाति, धर्म और प्रथा को व्यक्तिगत स्तर से ऊपर उठकर सबका विकास और एकता प्रतिष्ठा करना अभिराम परमहंस का विचार था। धार्मिक समानता लाने के लिए अभिराम सदा तत्पर रहते थे। नारीयों का सम्मान करना और धर्म के माध्यम से सबका उन्नति करना उनका धर्म का विशेष गुण। वे सिर्फ एक संत नहीं थे बल्कि वे थे एक मानविकी पुरुष। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से लेकर समाज को सुस्त और सुखी करने के लिए आजीवन अपने कर्म पर अटुट रहते थे अभिराम परमहंस।

संदर्भ सूची

1. रचनाबली अभिराम, *श्री अभिराम परमहंसदेव,* श्रीशांति आनंदाश्रम सेवासंघ, करमला, पुरी, 2009।
2. चक्रधर दास, *श्री श्री अभिराम परमहंसदेव की चरितामृत,* श्री शांति आनंदाश्रम सेवासंघ, करमला, पुरी, 1995।
3. रथ विधुप्रभा, ठाकुर अभिराम परमहंस, सिद्धेश पाब्लिशिंग हाउस, कटक–2008।
4. राय हृदानंद, *कलि भागवत समीक्षा,* श्रीगुरु प्रकाशनी, करमला, पुरी, द्वितीय संस्करण, 2013।
5. सिंह विजयानंद, संथकबि अभिराम परमहंस, ओड़िशा साहित्य अकादेमी, संस्कृति भवन, भुवनेश्वर, 2020।

****